

इस्लाम के बारे में सर्वोच्च दस मथिक (2 का भाग 1): जानकारी होने के बाद भी इस्लाम के बारे में गलत धारणाओं से नहीं बचा जा सकता है

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2014 IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

जब से मुस्लमि इस्लामी साम्राज्य की स्थापना के लिए अरब प्रायद्वीप से बाहर आए हैं, तब से इस्लामी जीवन शैली के बारे में मथिक और भ्रान्तियां फ़ैल गईं। लगभग 1500 साल पहले एक ईश्वर की पूजा ने ज्वात दुनयिा को बदल दयिा, हालांकि मथिक अभी भी इस्लाम को घेरते हैं, भले ही दुनयिा के लोगों के पास अभूतपूर्व मात्रा में जानकारी है। इस दो भाग के लेख में हम 10 सबसे आम मथिकों के बारे में बताएंगे, जो आज गलतफहमी और असहषिणुता का कारण हैं। ये मथिक हैं:



1. इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है।

21वीं सदी के दूसरे दशक में शायद यह इस्लाम के बारे में सबसे बड़ा मथिक है। ऐसे दौर में लगता है कि दुनयिा बेगुनाहों की हत्या से पागल हो गई है, यह दोहराया जाना चाहिए कि इस्लाम धर्म युद्ध के लिए बहुत वशिष्ट नियम निर्धारति करता है और जीवन की पवतिरता को बहुत महत्व देता है।

"...कजसिने कसिी वयक्तिको कसिी के खून का बदला लेने या धरती में फ़साद फ़ैलाने के अतरिकित कसिी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इनसानों की हत्या कर डाली। और जसिने उसे जीवन प्रदान कयिा, उसने मानो सारे इनसानों को जीवन दान कयिा।..." (कुरआन 5:32)

बेगुनाहों की हत्या पूरी तरह से प्रतबिंधति है। जब पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) अपने साथियों को युद्ध में भेजा, उन्होंने कहा "ईश्वर के नाम पर बाहर जाओ और कसिी भी

बूढ़े आदमी, शशि, बच्चे या महिला को मत मारो। अच्छाई फैलाओ और अच्छा करो, क्योंकि ईश्वर उन लोगों से प्यार करता है जो अच्छा करते हैं।"[1] "मठों में भिक्षुओं को मत मारो" या "उन लोगों को मत मारो जो पूजा के स्थानों में बैठे हैं।"[2] एक बार युद्ध के बाद पैगंबर ने जमीन पर पड़ी एक औरत की लाश देखी और बोली, "वह लड़ नहीं रही थी। फिर कैसे मारा गया?"

इस्लामिक साम्राज्य के पहले खलीफा अबू बक्र ने इन नियमों पर और जोर दिया। उन्होंने कहा, "मैं तुम्हें दस बातों की आज्ञा देता हूँ। महिलाओं, बच्चों, या वृद्ध, कमजोर व्यक्तियों को मत मारो। फलदार पेड़ों को मत काटो। किसी नविस स्थान को नष्ट न करो। भोजन के अलावा भेड़ या ऊंट का वध न करो। मधुमक्खियों के छत्ते मत जलाओ और उन्हें तितर-बितर मत करो। लूट के माल से चोरी मत करो, और कायर मत बनो।"[3] इसके अलावा मुसलमानों को आक्रामकता के अनुचित कार्य करने से मना किया जाता है। किसी ऐसे व्यक्ति को मारना कभी भी जायज़ नहीं है जो शत्रुतापूर्ण न हो।

"तथा ईश्वर की राह में, उनसे युद्ध करो जो तुमसे युद्ध करते हों और अत्याचार न करो, ईश्वर अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता ..." (क़ुरआन 2:190)

2. इस्लाम महिलाओं पर अत्याचार करता है।

इस्लाम अपने जीवन के हर चरण में महिलाओं को सर्वोच्च सम्मान देता है। एक बेटी के रूप में वह अपने पति के लिए स्वर्ग का दरवाजा खोलती है।[4] एक पत्नी के रूप में, वह अपने पति का आधा धर्म पूरा करती है।[5] जब वह एक माँ होती है, तो स्वर्ग उसके पैरों तले होती है।[6] मुस्लिम पुरुषों को महिलाओं के साथ सभी परिस्थितियों में सम्मानपूर्वक व्यवहार करने की आवश्यकता है क्योंकि इस्लाम कहता है कि महिलाओं के साथ सम्मान और नष्पिक्षता दोनों का व्यवहार किया जाए।

इस्लाम में पुरुषों की तरह महिलाओं को भी ईश्वर पर विश्वास करने और उसकी पूजा करने की आज्ञा दी गई है। परलोक में इनाम के मामले में स्त्रियों पुरुषों के बराबर हैं।

"तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, फिर विश्वास भी रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे और तनकि भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।" (क़ुरआन 4:124)

इस्लाम महिलाओं को संपत्तरिखने और अपने वतित को नियंत्रित करने का अधिकार देता है। यह महिलाओं को वरिसत का औपचारिक अधिकार और शिक्षा का अधिकार देता है। मुस्लिम महिलाओं को शादी के प्रस्तावों को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का अधिकार है और वे परिवार को समर्थन देने और बनाए रखने के दायित्व से पूरी तरह से मुक्त हैं, इस प्रकार कामकाजी विवाहित महिलाएं घर के खर्चों में योगदान करने के लिए स्वतंत्र हैं, घर के खर्चों में योगदान करना उनकी

अपनी मर्जी है। इस्लाम महिलाओं को जरूरत पड़ने पर तलाक लेने का भी अधिकार देता है।

दुख की बात है कयिह सच है ककिछ मुस्लमि महिलाओं पर अत्याचार कयिा जाता है। दुर्भाग्य से बहुत से लोग अपने अधिकारों के बारे में नहीं जानते हैं और सांस्कृतिक विपथन के शिकार हो जाते हैं, जनिका इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। शक्तिशाली व्यक्ति, समूह और सरकारें मुस्लमि होने का दावा करती हैं फरि भी इस्लाम के सिद्धांतों का पालन करने में बुरी तरह विफल होती हैं। यदि महिलाओं को उनके ईश्वर प्रदत्त अधिकार दिए गए, जैसा कि इस्लाम धर्म में निर्धारित किया गया है, तो महिलाओं के वैश्विक उत्पीड़न को खत्म किया जा सकता है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "एक महान पुरुष वह है जो महिलाओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार करता है और एक नीच ही महिलाओं के साथ अपमानजनक व्यवहार करता है।"^[7]

3. सभी मुसलमान अरब के हैं

इस्लाम धर्म सभी लोगों के लिए, हर जगह, हर समय प्रकट हुआ। कुरआन अरबी भाषा में उतारा गया था और पैगंबर मुहम्मद अरब के थे, लेकिन यह मान लेना गलत होगा कि सभी मुसलमान अरब के हैं, या उस बात के लिए कि अरब के सभी लोग मुस्लमि हैं। वास्तव में दुनिया के 1.57 अरब^[8] मुसलमानों में से अधिकांश अरबी नहीं हैं।

हालांकि बहुत से लोग, विशेष रूप से पश्चिम में, इस्लाम को मध्य पूर्व के देशों से जोड़ते हैं, प्यूरसिर्च सेंटर के अनुसार लगभग दो-तर्हिई (62%) मुसलमान एशिया-प्रशांत क्षेत्र में रहते हैं और वास्तव में अधिक मुसलमान भारत में रहते हैं और पूरे मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीकी क्षेत्र (317 मिलियन) की तुलना में पाकिस्तान (344 मिलियन संयुक्त) मुसलमान रहते हैं।

प्यू के अनुसार, "मुसलमान दुनिया भर के 49 देशों में बहुमत आबादी वाले हैं। सबसे बड़ी संख्या (लगभग 209 मिलियन) वाला देश इंडोनेशिया है, जहां 87.2% आबादी मुस्लमि है। भारत में दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी मुस्लमि आबादी है - हालांकि लगभग सबसे बड़ी मुस्लमि आबादी संख्या (लगभग 176 मिलियन) भारत की कुल आबादी का सिर्फ 14.4% है।"

इस्लाम कोई जाति जातीयता नहीं है - यह एक धर्म है। इस प्रकार स्कैंडिनेविया के अल्पाइन टुंड्रा से लेकर फिजी के गर्म तटीय जल तक दुनिया के सभी हिस्सों में मुसलमान मौजूद हैं।

"हे मनुष्यो! हमने तुम्हें पैदा किया एक नर तथा नारी से तथा बना दी है तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ, ताकि एक-दूसरे को पहचानो ..." (कुरआन 49:13)

फुटनोट:

[1] ??? ???? ?

[2] ???? ???? ?

[3] तबरी, अल (1993), ? ?????????????? ?? ????????, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, पृ. 16

[4] ???? ?????????? अहमद और इब्न माजा में एक बेटी को उसके पिता के लिए "आग की ढाल" कहा जाता है।

[5] ?? ????????? ?

[6] ???? , ??-????? ?

[7] ?? ????????????? ?

[8] धर्म और सार्वजनिक जीवन पर प्यू फोरम द्वारा "वैश्विक मुस्लिम आबादी का मानचित्रण" रिपोर्ट के अनुसार।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/10650>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।